राजर्षी शाहू महाराज- 'सामाजिक परिवर्तन की एक नई उड़ान'

प्रा. डॉ. मनाली सूर्यवंशी सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग न्यू कॉलेज, कोल्हापूर

Email- manalisurya2019@gmail.com

प्रस्तावना:

राजर्षी शाहू महाराज का नाम एक प्रजातंत्रवादी एवं समाज सुधारक के रूप में जाना जाता है| उन्होंने प्रजाहित के लिए ऐसे क्रांतिकारक कदम उठाये कि,इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरो से लिखा जाने लगा| वहराजा थे परंतु दलित एवं शोषित वर्गकी पीड़ा को समझते थे| सामाजिक भेदभाव मिटाने के लिए उन्होंने रचनात्मक उपाय-योजनायें की | अंतरजातीय विवाह, विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में आवाज उठाई | गरीब तथा दलित वर्ग के बच्चों को मुफ्त शिक्षादी| सन1917 में'बलुतधारी प्रथा' तथा सन 1918 में वतनधारी प्रथा का अंत किया | उन्होंने सभी जाती वर्गों को समान रूप से देखा |

प्रस्तुत लेख के अंतर्गत इसी प्रकार के शाहूजी महाराज के कर्तव्य की सीढी को आगे कुछ मुद्दों के आधार पर विवेचित करने का प्रयास रहेगा|

समाज कल्याण की भावना-

कोल्हापुर की गद्दी पर शाहू महाराजा छत्रपति को बैठा देखकर करवीर रियासत की प्रजा में आनंदोस्तव मनाया गया | महाराष्ट्र की, हिंदुस्तान की प्रजा के कल्याण के लिए बहुत से काम करने लायक है अभी...ऐसे ही कई विचार अपने मन में रखते हुए और अपने हिंदुत्व पर उचित गर्व करते हुए उसकी समृद्धि तथा सुरक्षा के लिए प्रयासरत रहने का वचन स्वयं को देना और उसका पालन करना कोल्हापुर के शासकों का पुनीत कर्तव्य रहा है।"जय भवानी बोल के छत्रपति महाराज बैठे हैं तख्त पर...' इक्कीस तोपों की सलामी ! स्वर्णथाल में तलवार और बेशकीमती दुशाला, पगड़ी, तलवार उठा कर सौंपते हैं गवर्नर, शाहू जी को"[i]इसके साथ ही छत्रपति द्वारा जारी प्रथम आज्ञा पत्र की ओर सभी का ध्यान जाता है | इस आज्ञा पत्र में सभी वर्गों के प्रति वफादार रहने का वचन दिया गया था, साथ ही प्रजा से यह कामना भी थी की, सभी वर्ग के लोग उनका सहयोग करेंगे |शाहूजी के 14 अप्रैल1894 के आज्ञा पत्र से नैतिकता और सामाजिकता का उदाहरण देखिए–

"1.गेहूं, ज्वार, चावल, दाल, आटा, शक्कर, मसाले आदि वस्तुएं कोल्हापुर के खानगी की विभाग से ले ली जाए !

2. बकरे, मुर्गी, अंडे आदि वस्तुएं खरीदने के लिए खानगी विभाग के एक व्यक्ति को भेजकर वहां के पेंठ के दिन मालिक को पैसा देकर खरीदी जाए। उसकी रसीद स्थानीय कर्मचारी के सामने पैसा चुका कर उसके हस्ताक्षर ले ले | अगर वह उपस्थित न हो तो गांव के चौधरी या कुलकर्णी के सामने पैसा अदा किया जाए और उसकी गवाही ले ली जाए | दूध के लिए भैसे साथ में ले जाने का इंतजाम किया जाए अथवा जिससे दूध लिया जाए,उतना पैसा उसे तभी चुका दिया जाए|

3.माननीय पोलिटिकल एजेंट साहब, करवीर परगने या कर्नाटक का कोई अधिकारी, कोई अन्य अमला किसी काम से आए तो उस स्थान से तहसीलदार, या रिश्तेदार आदि जो साहिब लोग माल लेंगे उनसे या उनके हाथों से नकद रकम ले और बाजार की दर के हिसाब से जिनसे सौदा लिया, उसे तभी दे दे|

- दीवान करवीर सरकार की हुकूमत से"[ii]

एक राजा द्वारा गद्दी पर बैठने के पहले ही दिन एक साथ इतनी सारी राजकीय घोषणाएं देखकर प्रजा चौंक उठी | शाहू जी महाराज ने समाज कल्याण के लिए कई घोषणाएं की | समाज सुधारक ज्योतिराव गोविंदराव फुले के योगदान से वे काफी प्रभावित थे | वे एक आदर्श नेता और सक्षम शासक थे | जो अपने शासन के दौरान कई प्रगतिशील गतिविधियों से जुड़े रहे | उनके राजा बनने के पश्चात लगभग छ: महीने होने के बाद भी अभिनंदन सामारोहो का सिलसिला थमा नहीं था | ऐसे ही पुणे के एक अभिनंदन समारोह के दौरान गोपाल कृष्ण गोखले ने प्रश्नात्मक अनुरोध किया था कि 'क्या महाराज अपने राज्य की प्रजा की सुख-शांतिऔर सर्वात्मिक उन्नति का ख्याल रखेंगे? उत्तर में शाहू जी ने कहा, "सिर्फ अपने राज्य की नहीं, संपूर्ण महाराष्ट्र की सर्वतोमुखी सुख-शांति और विकास मेरा लक्ष्य रहेगा | मात्र कोल्हापुर की प्रगति मेरा लक्ष्य नहीं है | मेरी नजर में हिंदू ही नहीं, मुसलमान और अन्य सांप्रदायिक इकाइयां भी है। सबमें परस्पर स्नेह और सौहार्द होना चाहिए।"शाहू जी महाराज के इस वक्तव्य पर बहुतों के कान खड़े हो गए | परंतु दूसरे ही दिन पुणे के सारे अखबारों में शाहू जी की इस नीति की बहुत प्रशंसा हुई | उन्होंने गैर ब्राह्मणों को प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रोत्साहित किया | नौकरियों में समान रूप से हक देने का यत्न किया।"आए दिन सरकारी पदों पर गैर ब्राह्मणों की नियुक्तियां होने लगी" [iii]परिणाम स्वरूप ब्राह्मण उनके प्रति ईर्ष्यालु होने लगे | शुद्र मराठों और कायस्थों के अधीन रहकर काम करना ब्राह्मणों को उचित नहीं लग रहा था | परंतु शाहू जी महाराज ने किसी की ओर ध्यान नहीं दिया।"जिसके जो जी में आए कहता फिरे मुझे चुपचाप अपना काम किए जाना है |

ब्राह्मणों ने मुझ पर ब्राह्मण विरोधी होने का ठप्पा लगा दिया है | मैं ब्राह्मण विरोधी नहीं हूं | नहीं हूं | नहीं हूं | हां अगर सब के सर्वात्मक उत्थान का नाम ब्राह्मण विरोध है तो और बात है किसी शुद्र की तपस्या से किसी ब्राह्मण को पुत्र-शोक होता है तो रखे अपने पास ये प्रपंच भरे गप। मुझे किसी से सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं है।" [iv]

अकालमें प्रजा को सहयोग :

शाहू जी काहृदयचीथड़े लपेटे बच्चे, मामूली नाकाफ़ी कपड़ों में लिपटे कंगाल लोग, लाठी टेकते बूढ़े-बुढीयों के कंकालों को देखकर दु:ख और पीड़ा से भर आता | ऐसे में लगातार 2 वर्षों से बारिश हुई ही नहीं | महाराज अकाल का दौरा करने लगे। जगह-जगह धरतीची चिहराकर फटी हुई | कुओं में नदियों में पानी की बूंद नहीं | मेघा राजा को बुलाने के लिए सामान्य जन प्रार्थनाएं और टोने-टोटके कर रहे थे | झाड़ियां सूख गई | लोग गांव छोड़-छाड़ कर, परिवार और मवेशियों को लेकर जाने लगे |सब तरफजमकर जमाखोरी मची हुई थी | कुलकर्णी, पाटिल, वतनदार मौज में, बाकीके लिये अंधेर- अंधेरा | शाहूजी से यह देखा नही गया |वे विचार करते है, कि सिर्फ दो साल वर्षान होने पर लोग मरने क्यू लगेंगे ? कहीं-न-कहीं तो गडबड जरूर है | अकाल तो सबके लिए है | अगर गरीब किसान मर रहे है, तो साहूकार, महाजन कैसे मौज मेंरह सकते है ?उन्होंनेवणिक समाज को बुलाकर अनाज को लागत भाव पर बेचने को कहा| "अकाल हमेशा नहीं रहेगा सेठ | तब तक लागत भाव पर बेचो | माने ₹2 मन खरीदा तो ₹2 मन ही बेचना है।"[v] इस पर कुछ ने माना और सस्ते दर पर अनाज की दुकान खोल दी | कुछ ने हथियार डाल दिए हमसे ना होगा परंतु शाहू जी ने निश्चय किया था।" एक भी जन को मरने नही दूँगा, चाहे इसके लिये मुझे दुसरो के सामने भिखारी ही क्यू ना बनना पडे | चादर फैला दी | कर्नाटक से धान मिला। कहीं से कुछ, कहीं से कुछ।" मनुष्य की समस्या सुलझी,कि मवेशियों की आन पड़ी। जगह-जगह गाय, भैंस, बैल और मरे पड़े नजर आने लगे। उनके हाड-हाड और उभरी पसलियां ऐसे दिखाई दे रही थी मानो हड्डियों के ढांचे पर कपड़ा डाला गया हो | तब शाहूजी महाराज ने लगभग 6 एकड़ जमीन में जानवरों की छावनी खोल दी। 'पांजरपोठ', जानवरों के लिए मुफ्त चारा पानी, मुफ्त चिकित्सा, यह बात देखते-देखते हवा की तरह फैल गई | कर्नाटक और आंध्र के मवेशी भी इस प्रजावत्सल राजा के आश्रय में अपने जानवरों को लेकर आए। ऐसेनिर्णयों से शाहू जी महाराज लोगों के दिलों में रहने लगे। प्रजा को उन्हें भर- भर के आशीर्वाद देने लगी।

प्लेग में प्रजा के आरोग्य की देखभाल:

अकाल की समस्या क्या कम थी कि प्लेग आ गया | एक युद्ध जीत रहे थे और एक सामने था | युवा राजा का युवा उत्साह अकाल से भले ही कुछ मौतें हुई हो,परंतुप्लेग से किसी को मरने नहीं देंगे| ऐसा निश्चय करते हुए उन्होंने फरमान निकाला- लगान की वसूली स्थगित रहेगी | जांच शिविर में विदेशियों से लेकर सब की जांच होगी और प्लेग से पीड़ित किसी मरीज के बारे में सूचना देने वाले को 10 से ₹15 का इनाम दिया जाएगा।

शाहू जी महाराज एक ऐसे राजा थे जो अकाल और प्लेग जैसी समस्याओं से निपटने के लिए राज्य का खजाना खाली होते हुए भी प्रजा हित के लिए कुछ कसर नहीं छोड़ते थे | उन्होंने सारे प्रजा को समान रूप से देखा क्योंकि उनके स्वयं के अनुभव ऐसे थे कि वे विचार करते कि -"जब एक राजा को वह सरेआम शूद्र कह कर लांछित करने का दुस्साहस कर सकता है तो बाकी गैर- ब्राम्ह्मो के साथ कैसा सुलूक करता होगा वह अदना ब्राह्मण!" [vi]

दलितों के प्रति प्रेमभाव :शाहू जी महाराज का दिल तबदहल गया जब गंगाराम कांबले नामक व्यक्ति की एक मराठा समाज के नौकर संतराम ने चाबुक से चमड़ी उधेड़ दी। क्योंकि उसने दलितों के लिए वर्जित पानी की टंकी को छू लिया था।"पीटता रहा गंगाराम ! खदेड़-खदेड़कर चाबुक सटकारता रहा संतराम। तार-तार होते रहे बदन के कपड़े, उधड़ते रहे पीठ के,कंधे के चमड़े। देखते रहे मांग! देखते रहे महार! देखते रहे मराठे!" [vii]कहते हैं यह सब महाराज की अनुपस्थिति में हुआ शाम तक दिल्ली से लौट आए शाहू जी | दूर से ही देखा भीड़ को | पास आए -'कौन गंगाराम ? क्या बात है ? अरे तुम्हारे तो कपड़े भी फटे हैं, देह भी खून से रंगी हुई।'शाहू जी ने पूछा। फफक-फफक कर रो पड़ा गंगाराम... हिचकियां लेते हुए अपनी पीठ पर पड़े कोड़ों, चाबुकों के निशान दिखाएं,तो महाराज आग-बबूला हो गए उन्होंने गंगाराम के साथ ऐसा सलूक करने वाले नौकर को बुलवाकर खुद उसकी पिटाई की | गंगाराम का कुसूर था कि वह महार था और संतराम एवं उसके साथी मराठे। संतरामको लगा मराठा होना एक कवच की तरह उसे किसी भी दंड से बचा लेगा। परंतु एक न्यायप्रिय राजा ने सही गलत का फैसला उसी वक्त किया और मराठा होते हुए भी संतराम को दंड दिया | उन्होंने जाति- भेद मिटाने का पूर्ण प्रयास किया |वे मनुष्य को नीच जाति का होने से उससे जानवरों जैसे सलूक करना कदापि उचित नहीं समझते थे | उन्होंने गंगाराम को प्रेमपूर्वक थपथपाकर सेवामुक्त किया और कुछ पैसे भी दिए। ताकि वह अपना कुछ व्यवसाय शुरू कर सके | गंगाराम कांबले ने 'सत्यसुधारक' नाम से होटल खोला मगर अछूत के होटल में चाय पीने कौन जाए ? कुछ दिनों बाद शाहूजी अपनी

बग्घी से कहीं जा रहे थे। साथ में कुछ कर्मचारी भी थे | रास्ते के उस पार हाथ जोड़े गंगाराम कांबले खड़ा था। उसने चाय की दुकान खोली थी परंतु ऊंची जाति के कोई भी व्यक्ति उसके हाथ की चाय पीने नहीं जाते थे | शाहू महाराज ने उसके हाथ की बनी चाय पीना शुरू किया और अपने साथ आए हुए नौकरों ,कर्मचारियों को भी वे उसके हाथ की चाय पीने को कहते | आज से दरबार के सारे कर्मचारी और अफसर गंगाराम कांबले के ही दुकान से चाय पिएंगे, क्यों गंगाराम पिलाओगे ना ?"[viii]इसके बाद जब कभी महाराज वहां से गुजरते तो गंगाराम के हाथ की चाय पी कर ही आगे बढ़ते राजा शाहू जी को यही तो चाहिए था। वे प्रत्येक मनुष्य के अस्तित्व को उभारना चाहते थे | उनके मान की रक्षा करना चाहते थे| सम्मान के साथ जीने का मूलभूत अधिकार वंचितों को देना यही उनका नैतिक कर्तव्य था।

निष्कर्ष

इस प्रकार शाहू महाराज छत्रपति ने महज 28 वर्षों के शासन में क्या-क्या कर नहीं दिखाया था। आजीवन समाज कल्याण को ध्यान में रखते हुए अपने विचारों को कृति के माध्यम से पूर्ण रूप देने का प्रयास किया | नि:शुल्क शिक्षा, स्कूलों का प्रसार, जगह-जगह निशुल्क छात्रावास, ब्राह्मण पुजारी व्यवस्था को तोड़ना, अंतरजातीय विवाह को प्रोत्साहन देने के साथ लड़कियों को शिक्षा का अधिकार दिलाने के लिए प्रयास आदि ऐसे कई सुधारक काम उन्होंने किए| जातीय अपमान से बाहर निकलने के लिए वतनदारी या जागीर से सभी को मुक्त करा दिया। सामान्य से सामान्य और शूद्र से शूद्र को भी गले लगा कर एक श्रेष्ठ मनुष्य की पहचान बनाई | अपने विचारों से कृति से वह एक नर श्रेष्ठ राजा बने।

संदर्भ सूचि :

1. संजीव, प्रत्यंचा, वाणी प्रकाशन, कानपूर पृ. 14
2. संजीव, प्रत्यंचा, वाणी प्रकाशन, कानपूर पृ. 17
3. संजीव, प्रत्यंचा, वाणी प्रकाशन, कानपूर पृ. 26
4. संजीव, प्रत्यंचा, वाणी प्रकाशन, कानपूर पृ. 30
5. संजीव, प्रत्यंचा, वाणी प्रकाशन, कानपूर पृ. 33
6. संजीव, प्रत्यंचा, वाणी प्रकाशन, कानपूर पृ. 40
7. संजीव, प्रत्यंचा, वाणी प्रकाशन, कानपूर पृ. 151
8. संजीव, प्रत्यंचा, वाणी प्रकाशन, कानपूर पृ. 153